दीप त्रिवेदी

बेस्टसेलर 'मैं मन हूँ' के लेखक द्वारा लिखित

मैं कृष्ण हूँ 1

कृष्ण की आत्मकथा

मेरा अद्भुत बचपन

मैं कृष्ण हूँ – मन और जीवन का मास्टर

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

लेखक का परिचय

मशहूर वक्ता

लेखक की कलम से…

कृष्ण पर रिसर्च की पूरी दास्तान

कॉपीराइट पेज

नं. विषय

01. मेरा जन्म
02. मेरा प्यारा बचपन
03. गोकुल में भेड़िए का आतंक
04. वृन्दावन की स्थापना
05. राधा से वो पहली हसीन मुलाकात
06. इन्द्र पूजा रोककर सनसनी फैलाना
07. वृन्दावन में ऐतिहासिक रासलीला रचाना
08. केशी वध
09. गोपियों का विरह
10. मेरा मथुरा प्रवेश
11. मेरा कंस से आमना-सामना

लेखक का परिचय

दीप त्रिवेदी एक प्रसिद्ध लेखक, वक्ता और स्पीरिच्युअल सायको-डाइनैमिक्स के पायनियर हैं जो कि एक व्यापक दृष्टिकोण से ना सिर्फ लिखते हैं, बल्कि विभिन्न विषयों पर लेक्चर्स भी कंडक्ट करते हैं। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्हें पढ़ने व सुनने-मात्र से मनुष्य में आमूल सकारात्मक परिवर्तन आ जाता है। वे अपने कार्यों द्वारा आजतक हजारों लोगों को सुख और सफलता के मार्ग पर लगा चुके हैं।

दीप त्रिवेदी ने अपने इन कार्यों द्वारा प्रकृति, उसके नियम, उसका आचरण, उसकी सायकोलोजी और उसके मनुष्यजीवन पर पड़नेवाले प्रभाव को बड़ी ही गहराई से समझाया है। जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है जिसे उन्होंने न छूआ हो। वे कहते हैं कि सायकोलोजी के बाबत कम ज्ञान और कम समझ होना ही मनुष्य-जीवन के तमाम दु:खों और असफलताओं का मूल कारण है।

बेस्टसेलर 'मैं मन हूँ' और कई अन्य किताबों के लेखक, दीप त्रिवेदी की खास बात यह है कि वे जीवन के गहरे-से-गहरे पहलुओं को छूते हैं और उन्हें सरलतम भाषा में लोगों के सामने प्रस्तुत करते हैं जिससे कन्फ्यूजन की कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं बचती है।

मनुष्यजीवन की गहरे-से-गहरी सायकोलोजी पर उनकी पकड़ का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 'मनुष्यजीवन पर आधारित सर्वाधिक लेक्चर्स' देने का रेकॉर्ड उन्हीं के नाम पर है और जो कि एशिया बुक ऑफ रेकॉड्र्स और इंडिया बुक ऑफ रेकॉड्र्स में दर्ज भी है। इसके अलावा, 'भगवद्गीता' पर सर्वाधिक लेक्चर्स देने का रेकॉर्ड भी उन्हीं के नाम पर है और यह भी एशिया बुक ऑफ रेकॉड्र्स और इंडिया बुक ऑफ रेकॉड्र्स में दर्ज है, जिसमें उन्होंने 58 दिनों में गीता पर 168 घंटे, 28 मिनट और 50 सेकंड तक एक लंबी चर्चा करी है। ये सारे लेक्चर्स भारत में लाइव ऑडियन्स के सामने दिये गए थे।

वे अपने लेख और लेक्चर्स में जिस अनोखी स्पीरिच्युअल-सायकोलोजिकल भाषा और एक्सप्रेशन का इस्तेमाल करते हैं, उन्हें पढ़ने तथा सुनने वालों में उसका तात्कालिक प्रभाव भी होने लगता है और यही बात उन्हें इस क्षेत्र का पायनियर बनाती है।

इनके बारे में और अधिक जानने के लिए विजिट करें : www.deeptrivedi.com

दीप त्रिवेदी - मशहूर वक्ता

दीप त्रिवेदी सायको-स्पीरिच्युअल कॉन्टेंट, आवाज, भाषा और एक्सप्रेशन का ऐसा मिश्रण प्रस्तुत करते हैं जिससे उन्हें देखने और सुनने वालों में तत्काल परिवर्तन आता है। सैकड़ों लोग सिर्फ उन्हें सुनने-मात्र से परिवर्तित हो चुके हैं। इसी वजह से उन्हें स्पीरिच्युअल सायको-डाइनैमिक्स का पायनियर भी कहा जाता है।

‘मनुष्यजीवन पर सर्वाधिक लेक्चर्स’ देने का रेकॉर्ड

दीप त्रिवेदी के नाम पर एशिया बुक ऑफ रेकॉड्र्स में दर्ज है।

दीप त्रिवेदी, मनुष्यजीवन पर सर्वाधिक लेक्चर्स देनेवाले
नेशनल रेकॉर्ड होल्डर इंडिया बुक ऑफ रेकॉर्ड्स में नामित

दीप त्रिवेदी जीवन से जुड़े हर विषय पर प्रकाश डालते हैं। जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है जिसे उन्होंने न छूआ हो। वे अनेक विषयों पर बोल चुके हैं जैसे:-

- प्रकृति के नियम
- मन
- बुद्धि
- अहंकार
- शरीर
- डीएनए-जीन्स
- सत्य
- कोन्सन्ट्रेशन
- सेल्फ-कॉन्फिडेंस
- इंटेलिजेंस
- भाग्य
- भगवान
- टाइम एण्ड स्पेस
- धर्म
- इंद्रियां और उनकी कार्यप्रणाली
- प्रेम
- क्रोध
- विवाह

...और भी बहुत कुछ

लेखक की कलम से...

'कृष्ण' एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसके बारे में हरकोई जानना और समझना चाहता है। लेकिन उन्हें पूरा-का-पूरा शायद ही किसी ने कभी जाना या समझा हो। जो शायद कभी किसी की समझ में नहीं आया। इतनी तो उनके व्यक्तित्व की भिन्नताएं थीं कि वे पूरे-के-पूरे कभी किसी की पकड़ में नहीं आए। फिर भी जितना प्यार कृष्ण को मिला और जिस कदर लोगों ने उन्हें दिलों में बिठाया, वह अपने-आप में एक मिसाल है। उनके व्यक्तित्व का कमाल तो यह कि कोई उन्हें प्रेमी मानता है तो कोई ध्यानी, कोई योगी मानता है तो कोई कर्मवीर। और मजा यह कि जो उनके जिस रूप को जानता या मानता है, वह उनके उस रूप का दीवाना हो जाता है। हालांकि चारों ओर हरकोई उनका दीवाना ही है, ऐसा भी नहीं है। उनके व्यक्तित्व का विरोधाभासी प्रभाव यह भी है कि जहां हिन्दू धर्म के कुछ ज्ञानियों ने उन्हें एकमात्र "पूर्ण-अवतार" माना, वहीं जैन शास्त्रकारों ने अपनी ही समझ, अपनी ही वजहों और अपने ही कारणों से उन्हें नरक में स्थान दिया। लेकिन कृष्ण का व्यक्तित्व इनमें से किसी की भी सोच का मोहताज कहां?

अब उनका व्यक्तित्व भले ही किसी अन्य की किसी सोच का मोहताज नहीं, परंतु उनका वास्तविक व्यक्तित्व समझना तो है ही। उनका जीवन जानना तो है ही। हमें यह तो जानना ही है कि कारागृह में पैदा होने व मौत के साए में पलने के बाद भी कैसे उन्होंने द्वारकाधीश की ऊंचाई पाई? यह जानना भी रोचक है ही कि राधा और उनका प्यार क्या था? क्यों राधा को उन्होंने छोड़ा? क्यों राधा जीवनभर उनकी याद में बृज की गलियों में बावरी घूमती रही? यह तो समझना ही पड़ेगा कि यह व्यक्ति क्या है जिनपर एकतरफ महाभारत जैसा विनाशकारी युद्ध कराने का इल्जाम है, और वहीं दूसरी तरफ जिन्हें भगवद्गीता जैसा सर्वश्रेष्ठ ज्ञान देनेवाले का गुमान भी उपलब्ध है। कृष्ण ऐसा तो कैसा विरोधाभासी व्यक्तित्व है कि जिन्हें चोर, कपटी, झूठा और छलिया कहनेवालों की भी जीवनभर कभी कोई कमी नहीं रही, तो वहीं उनके जीवन में वासुदेव, मधुसूदन, कान्हा, परमात्मा व ज्ञानी कहनेवालों की भी कभी कोई अछत नहीं रही। यही क्यों, कृष्ण ने कितने विवाह किए, उनकी कितनी संतानें थी, यह यादवस्थली क्या है, जैसे अनेक सवाल भी उनके बाबत जानने की जिज्ञासा जगाते ही हैं।

परंतु जिज्ञासा जागने के बावजूद उनके जीवन बाबत जानते कितने लोग हैं? कृष्ण के जीवन बाबत तमाम सवालों के उत्तर उपलब्ध कहां है? सो यह वर्तमान पुस्तक मैंने इसी उद्देश्य से लिखी है ताकि उनके जीवन के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं से सबको अवगत करवा सकूं। इस हेतु मैंने कृष्ण के बाबत उपलब्ध तमाम पौराणिक ग्रंथों जैसे हरिवंश पुराण, विष्णु पुराण, शिव पुराण, श्रीमद्भागवत पुराण, मार्कण्डेय पुराण, कूर्म पुराण, भविष्य पुराण, महाभारत व अन्य ऐतिहासिक ग्रंथों का गहन अध्ययन किया और तत्पश्चात उनमें उल्लिखित तमाम संवादों और कथा-प्रसंगों के व्यावहारिक तथा मनोवैज्ञानिक पहलू को समझने के बाद ही यह पुस्तक लिखी है। इसमें मैंने ना सिर्फ कृष्ण के 108 वर्ष के सम्पूर्ण जीवन तथा उसकी तमाम महत्वपूर्ण घटनाओं को समेटा है, बल्कि साथ ही इसमें मैंने कृष्ण के व्यक्तित्व को उनकी वास्तविक सायकोलोजी के अधिकतम निकट रखने की कोशिश भी करी है। साथ ही उनकी जीवन-यात्रा को रोचकता प्रदान करने हेतु इसे मैंने एक कहानी का स्वरूप दिया है। और कहने की जरूरत नहीं कि जब कहानी है तो कई किस्सों को साहित्यिक जरूरत के मद्देनजर यथासाध्य विस्तार भी देना पड़ा है।

दरअसल मैं एक सायकोलोजिस्ट हूँ। और एक सायकोलोजिस्ट की निगाह से समझें तो व्यक्ति हो, उसका जीवन हो या उसके जीवन में घटनेवाली कोई भी व कैसी भी घटना हो, अंत में तो सबकुछ एक सायकोलोजिकल शृंखला का ही अंग है। और कृष्ण का व्यक्तित्व भी अपनी तमाम महानताओं तथा जटिलताओं के बावजूद इसमें अपवाद नहीं। माना मानसिक तौर पर उन्होंने आसमान की ऊंचाइयां छूई हैं, पर फिर भी उनकी मनोदशा समझ से परे कतई नहीं है। और मेरा यह मानना है कि किसी भी घटनेवाली घटना से उसके घटित होने के कारण ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं। मनुष्य ने "क्या किया" यह जानने से ज्यादा महत्वपूर्ण उसने यह "क्यों किया" है। अत: इस पुस्तक में मैंने जितना महत्व कृष्ण के जीवन को दिया है, उतना ही महत्व उनकी मनोदशा को भी दिया है। सो मुझे यकीन है कि यह पुस्तक आपको ना सिर्फ कृष्ण के जीवन से अवगत कराएगी बल्कि उनके वास्तविक व्यक्तित्व से भी आपको रूबरू करवाएगी।

जहां तक मेरा सवाल है, तो मेरा तो जीवन ही भगवद्गीता ने बनाया है तथा कृष्ण व भगवद्गीता पूरी तरह मेरे दिल में अपनी पूरी सच्चाई के साथ स्थित हैं। लेकिन आम धारणा से अलग मेरा यह स्पष्ट मानना है कि किसी

को भी भगवान बना देना उन्हें हमसे दूर कर देता है। यह कहना कि वे भगवान ही पैदा हुए थे, यह तो उनके द्वारा अपनी प्रतिभा निखारने हेतु की गई मेहनत, उनकी प्रज्ञा, उनकी क्षमता व उनकी जिज्ञासा का सरासर अपमान है। क्योंकि सच तो यह है कि यहां जो भी व्यक्ति जो कुछ भी बना है, उसमें उसकी प्रज्ञा, उसकी क्षमता व उसकी मेहनत लगी ही हुई है। बाकी तो यह कह देना बड़ा आसान है कि यह महान बना, क्योंकि उसके भाग्य में लिखा था। हो सकता है कि यह शायद आपको अपने महान न बन पाने का एक पुख्ता बहाना प्रदान कर देता हो, लेकिन सच यह है कि व्यक्ति की महानता को उसके भाग्य से जोड़कर हम उसकी प्रतिभा व मेहनत का अपमान करते हैं। इसीलिए मैंने इस किताब में कृष्ण की सीखने की कला से लेकर उनके हर एक गुण को पूरे विस्तार से प्रकट करने का प्रयास किया है। और उन्हें यथा-तथ जानना व पहचानना ही हमें उनके वे गुण सीखने में सहायता करता है। कृष्ण ने भी हर घटना और हर व्यक्ति से जीवन में सीखा है। प्रेम, ध्यान, कर्म व ज्ञान के हर शिखर उन्होंने अपनी जिज्ञासा व कटिबद्धता के सहारे ही सर किए हैं। और... यही उनके जीवन से सीखने जैसा है। ...दरअसल यह पुस्तक उनके सम्पूर्ण जीवन के साथ-साथ उनके 'कृष्ण' से 'जय श्री कृष्ण' बनने की पूर्ण दास्तान भी अपने में समेटे हुए है। और मैं यह दावे से कहता हूँ कि हां, कृष्ण मनुष्यजाति के इतिहास के एकमात्र सम्पूर्ण व्यक्तित्व के मालिक हैं, परंतु उससे भी ज्यादा दृढ़ता से मैं यह कहता हूँ कि उन्होंने यह मुकाम अपनी लगन व प्रतिभा से पाया है। अत: मैं उनके साथ-साथ उनकी लगन और प्रतिभा को भी सलाम करता हूँ।

और जहां तक मेरा प्रश्न है, तो मैं तो उनके गुणों को अपने जीवन में उतारकर उनकी सायकोलोजी से अपना फासला कम करने हेतु कटिबद्ध हूँ, ताकि उनकी ही तरह मुझे भी जीवन के हर मोड़ पर सिर्फ विजय हाथ लगे। मैं भी ना सिर्फ अपना जीवन उनकी तरह हंसते-गाते बिता सकूं, बल्कि उनकी ही तरह मेरा भी यह जीवन मनुष्यता के काम आए; इस बात की उनसे प्रेरणा भी ले सकूं। और मुझे यकीन है कि कृष्ण के जीवन तथा व्यक्तित्व पर आधारित यह पुस्तक आपको भी बहुत कुछ सीखने और समझने की प्रेरणा देगी। ...बस इसी उम्मीद के साथ कृष्ण की यह रोचक कहानी मैं आपको समर्पित कर रहा हूँ।

दीप त्रिवेदी

कृष्ण पर रिसर्च की पूरी दास्तान

इसमें कोई दो राय नहीं कि कृष्ण एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व हैं, क्योंकि इतिहास के अनगिनत पन्नों में वे दर्ज हैं। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूँ कि कई बुद्धिमान लोग ऐसे अनेक महापुरुषों के जीवन व अस्तित्व को एक खूबसूरत कहानी से ज्यादा कुछ नहीं मानते। भले ही अन्य अनेकों के मामले में यह बात सही भी है, परंतु कृष्ण के बाबत ऐसा नहीं है। सायकोलोजिकली कहूं तो जब कहानी के सिरे व मनुष्य के व्यक्तित्व की शृंखला मिल जाए, तो फिर उस व्यक्ति तथा उसके जीवन को महज कोरी-कहानी नहीं माना जा सकता है।

तीन बातें कृष्ण के जीवन के वास्तविक अस्तित्व की गवाही पूरे जोर से देती हैं। एक, जो कहानी होती है, उसका कहानीकार एक ही होता है। ...यानी उसका सम्पूर्ण जीवन उस कहानी में ही आ जाता है। लेकिन कोई ऐसा ग्रंथ नहीं, जिसमें कृष्ण के सम्पूर्ण जीवन का वर्णन हो। कृष्ण के बाबत सबसे चर्चित, पुराना तथा लोकप्रिय

ग्रंथ महाभारत है। लेकिन यह ग्रंथ हस्तिनापुर-केन्द्रित है, अत: इसकी पूरी कहानी कौरवों और पांडवों के ईर्द-गिर्द घूमती है। इसमें प्राय: कृष्ण का जिक्र तभी आता है जब कृष्ण कौरवों, पांडवों या हस्तिनापुर के संपर्क में आते हैं। अत: महाभारत में ना तो कृष्ण के जन्म या बचपन की ही कोई चर्चा है, और ना ही उनके जीवन के अंतिम 36 वर्षों की कोई चर्चा ही है। परंतु उसके बावजूद यह मानना पड़ेगा कि कृष्ण का सम्पूर्ण सायकोलोजिकल व्यक्तित्व सिर्फ महाभारत में उपलब्ध है। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि भगवद्गीता महाभारत का ही अंश है, जो कि कृष्ण-अर्जुन के बीच संवाद के रूप में संकलित है। और इसमें कृष्ण अर्जुन को जो समझाते हैं, वह ना सिर्फ उनके जीवन का अनुभव है, बल्कि वे तमाम बातें उनके व्यक्तित्व का हिस्सा भी हैं।

इसके अलावा कहूं तो टुकड़े-टुकड़े में कृष्ण का जीवन कई ग्रंथों में उपलब्ध है, और यदि उन सबके सिरे मिला लिए जाएं तो करीब-करीब उनका सम्पूर्ण जीवन मिल जाता है। यहां यह बात विशेष रूप से समझने की है कि महाभारत के भी करीब एक लाख श्लोकों में से सिर्फ 8800 श्लोक जिसे "जय-खंड" के रूप में जाना जाता है, की रचना ही 3000 ई. पूर्व हुई है। ...बाकी के सारे श्लोक महाभारत में चौथी से दूसरी सदी ई. पूर्व में जोड़े गए हैं। अर्थात् कहने की जरूरत नहीं कि नब्बे प्रतिशत महाभारत भी काफी पीछे से भिन्न-भिन्न लोगों द्वारा लिखी गई है।

खैर, उसके पश्चात की बात की जाए तो महाभारत के बाद के करीब 1000 वर्षों में 15 अन्य प्रमुख ग्रंथ हैं, जिनमें कृष्ण के जीवन का उल्लेख है। लेकिन उनमें प्रमुखरूप से हरिवंश पुराण व विष्णु पुराण ही हैं, जिनमें कृष्ण के जीवन का सम्पूर्ण उल्लेख है। और यदि कृष्ण के जीवन बाबत कुछ भी लिखना या बोलना है तो ये दो ग्रंथ ही सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण व विश्वसनीय कहे जा सकते हैं। ...फिर भी मैं आपको यहां महाभारत के अलावा पंद्रह ग्रंथों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

ग्रंथ का नाम | सर्वमान्य रचनाकाल

01. <u>महाभारत</u> :
संपूर्ण एक लाख श्लोक में से मूल 8,800 श्लोक (जिसे जय खंड के नाम से भी जाना जाता है) की रचना लगभग 3000 ईस्वी पूर्व हुई तथा शेष की रचना चौथी से दूसरी सदी ईस्वी पूर्व हुई।

02. <u>शतपथ ब्राह्मण</u> :
लगभग नवीं सदी ईस्वी पूर्व में रचित यजुर्वेद की शाखा के इस ब्राह्मण ग्रंथ में कृष्ण का वर्णन वृष्णिवंशियों के एक संघर्षशील योद्धा के रूप में हुआ है।

03. <u>ऐतरेय आरण्यक</u> :
लगभग नवीं सदी ईस्वी पूर्व में रचित ऋग्वेद की शाखा के इस आरण्यक ग्रंथ में भी कृष्ण का वर्णन वृष्णिवंशियों के एक संघर्षशील योद्धा के रूप में हुआ है।

04. <u>निरुक्त</u> :
महर्षि यास्क द्वारा छठी सदी ईस्वी पूर्व में रचित इस ग्रंथ में स्यमन्तक मणि का वर्णन मिलता है जो कृष्ण-कथा का एक महत्त्वपूर्ण अंग है।

05. <u>अष्टाध्यायी</u> :
पाणिनि ने इस ग्रंथ की रचना छठी सदी ईस्वी पूर्व में की. इस व्याकरण ग्रंथ में कृष्ण तथा उसके जीवन से जुड़े कुछ शब्दों की परिभाषा दी गई है।

06. <u>गर्ग संहिता</u> :
चौथी सदी ईस्वी पूर्व में रचित इस ग्रंथ में कृष्ण के जन्म और बाल्य-काल का विवरण मिलता है। परन्तु पंद्रहवीं शताब्दी में आकर ब्राह्मणवाद, अवतारवाद तथा पूजापाठ व कर्मकांड से जुड़ी सामग्री बड़े पैमाने पर इसमें घुसेड़कर इसे विकृत कर दिया गया। इसलिए इस ग्रन्थ के अध्ययन में सावधानी की जरूरत है।

07. <u>जातक कथा</u> :
लगभग चौथी सदी ईस्वी पूर्व में रचित इस बौद्ध ग्रंथ के घट पंडित जातक कथा में कृष्ण का उल्लेख किया गया है।

08. <u>अर्थशास्त्र</u> :